सूरदास के काव्य में पर्यावरण चित्रण

*डॉ. नीरू

हिन्दी साहित्याकाश के सूर्य, ब्रज भाषा के प्रस्तोता, मधुर गीतकार एवं भक्त शिरोमणि बल्लभ सम्प्रदाय के कीर्ति स्तम्भ महाकवि सूरदास हिन्दी के ही नहीं वरन् विश्व के महान् कवि हैं। उनका काव्य केवल कृष्ण भक्ति लीला साहित्य ही नहीं है, अपितु कृष्ण लीला, रास लीला के अतिरिक्त इस साहित्य में बहुत कुछ ऐसा है जो अछूता पड़ा है। सूर का काव्य पूर्णरूपेण कृष्ण जीवन के साथ–साथ लोकोन्मुखी साहित्य भी है, इसमें पर्यावरण का सम्बन्ध लोक समाज से जुड़ा है । पर्यावरण से अभिप्राय भूमि को घेरे उन सभी भौतिक स्वरूपों से है जिसमें न केवल वह रहता है बल्कि जिनका प्रभाव उसकी आदतों एवं क्रियाओं पर स्पष्ट रूप से दिखाई पड़ता है । मनुष्य तथा पर्यावरण का गहरा सम्बन्ध है । मनुष्य समस्त भौगोलिक अध्ययन का केन्द्र बिन्दु है तथा पर्यावरण के जैविक घटक का सबसे महत्वपूर्ण अंग भी । पर्यावरण के अन्तर्गत प्रक तिजन्य सभी तत्व आकाश, जल, अग्नि, ऋतुएं, पर्वत, नदियां, तड़ाग, वृक्ष, वनस्पति, जीव–जन्तु, गृह– नक्षत्र, दिशाएं एक तरह से अखिल ब्रह्माण्ड ही समाहित हो जाता है । वातावरण के ये सभी तत्व मानव जीवन को प्रभावित करते हैं और साथ ही स्वयं भी मानवीय कृत्यों से प्रभावित होते हैं । इस प्रकार मानव और पर्यावरण का अन्योन्याश्रित रूपेण सम्बन्ध हो पाता है ।[1] पर्यावरण अदृश्य होते हुए भी सभी जीवों, व्यक्तियों, वनस्पतियों आदि के लिए समान रूप से महत्वपूर्ण है । आज के सन्दर्भ में पर्यावरण शिक्षा ही व्यक्ति को पर्यावरण के प्रति जागरूक करने, पर्यावरण संरक्षण करने तथा समस्या समाधान में सहयोग दे सकती है । अतः स्पष्ट है कि पर्यावरण वर्तमान समय में अपनी उपयोगिता, महत्व तथा गुणों के कारण चर्चा का विषय बना हुआ है।

ब्रजभाषा के बाल्मीकि और साहित्याकाश के सूर्य महाकवि सूरदास ने अपने काव्य में पर्यावरण के विभिन्न रूपों को पर्याप्त महत्व दिया है । सूरदास के काव्य में परमोत्सव, लोकविश्वास, संस्कार आदि पर्यावरण के अंग बनकर उभरे हैं। अभी तक साहित्य में पर्यावरण के अनेक रूप सामने आए हैं, जिसमें सूर का लीला वर्णन भी पर्यावरण से अविच्छन्न नहीं है। ब्रज का आंगन उसकी क्रीड़ा स्थली है और मुक्त आकाश के नीचे चांदनी रात में कृष्ण की रास लीला का चर्मोल्लास आज भी बड़े उत्साह के साथ मनाया जाता है। लीला भूमि, ब्रज क्षेत्र सूर के आराध्य एवं किशोर कृष्ण की क्रीड़ास्थली रही है, जिसके प्रति सूर का हार्दिक अनुराग रहा है। दीक्षा लेने पर गोवर्धन पर स्थित श्रीनाथ जी के मन्दिर में पारसौली से तीन कोस रोज आना और जाना पर्यावरणीय सामीप्य इंगित करता है । ब्रजभूमि का आध्यात्मिक महत्व भी है। यमुना और कछार, कदम्ब और करील के कुंजों, पर्वत और समतल मैदानों, मृग, कोयल, पपीहा आदि पशु–पक्षिओं एवं पेड़–पौधों का वर्णन सूरकाव्य में बार–बार किया गया है। जिस प्रकार कृष्ण का विकास ब्रज की प्रकृति में होता है, उसी प्रकार सूर–साहित्य का विकास भी ब्रज प्रकृति की छाया में होता है । सूरकाव्य में पर्यावरण का अध्ययन प्रकृति के अन्तर्गत किया गया है। सूर के काव्य में पर्यावरण का खुला प्रागंण कृष्णलीला की आधार भूमि है । राधा–कृष्ण का प्रेम कुंजों में परवान चढ़ता है। गोचारण के लिए कृष्ण वन में जाते हैं, वहीं धेनु चराते हैं, बेनु बजाते हैं। सूर के पदों में पर्यावरण वर्णन चकोर, पंकज, केहरि, विभिन्न पुष्पों और राधा–कृष्ण के सौन्दर्य के उपमानों के रूप में प्रयुक्त हुआ है।

जहां एक और परमाणु बम के युग में जब करोड़ों नर–नारी एवं बच्चों को क्षणभर में नष्ट करने के षड़यन्त्र रचे जा रहे हैं,वहीं दूसरी और अमर कवि सूरदास का काव्य कृष्ण की बाल लीलाओं का वर्णन कर ध्वंस और विनाश के विरूद्ध एक मार्गदर्शक बनकर मानव को सजग करता है । महाकवि सूर ने अपनी प्रमुख रचना 'सूरसागर' में कृष्ण जन्मोत्सव को अत्यन्त मनमोहक रूप में प्रस्तुत किया है। शिशु का जन्म शुभ मनाने के लिए सोने के थाल में दधि रोचन लेकर सखियां नंद के द्वार पर आ जुटी हैं तथा प्रसन्नता से बौरा रही हैं और कहती हैं –

''मैं कहा बौराई आनन्द हृदय में नहीं समाता''[2] ब्रज नारियां कृष्ण के जन्म की प्रसन्नता में पुरू ाों को वन में जाने से रोकती हैः–

''आजु बन कौऊ वै जनि जाई। जब गाइनि बछरीन समेत, लै आनहु चित्र बनाई ।''[3] ब्रज में आज भी प्रसूति–गृह के द्वार पर स्वास्तिक बनाया जाता है। अतः कृष्ण जन्म पर नन्द के सिर पर दूब रखा जाता है। पूजा की थाली में लोक–गायक सूर कहीं भी दूब की महिमा को भूले नहीं है। यह दृश्य पर्यावरणीय वैभव से ओत–प्रोत है। शरद् ऋतु की चांदनी रात में राधा–कृष्ण और सभी गोपियां यमुना किनारे रास रचाते हैं। ऐसा सुन्दर पर्यावरणीय वैभव न पहले कभी देखा और न ही सुना है । बीच–बीच में मुरली की तान सुनकर गोपियां मुग्ध

*प्रवक्ता हिन्दी, डी.ए.वी. कॉलेज, अम्बाला शहर, हरियाणा।

हुई जाती हैं । चंचल पवन थककर डोलती नहीं है और यमुना उल्टी बहने लगती है ।

''आजु हरि अद्भूत रास उपायौ ।
एकहि सूर सब मोहित कीन्हे, मुरली–नाद सुनायौ ।
अचल चले, चले व्यक्ति भये, सब मुनि जन ध्यान भुलाओ।
चंचल पवन थक्यों' नहिं डोलत, यमुना उलटि बहायौ,
थकित भयौ चन्द्रमा सहित–मृग सुधा समुद्र बढ़ायौ ।''[4]

कृष्ण भक्त कवि सूर ने वृन्दावन के सर्वाधिक चित्र उतारे हैं । कृष्ण गोप सखाओं के साथ वृन्दावन में गायों को चरा रहे हैं । त्रिविध पवन चल रही है। समस्त वन हरीतिमा से सम्पन्न है । लताएं पुष्प–भार से झुकी हुई है ।

''देखत वन सब भये सुखारी, बहत मनोहरी त्रिविध बयारी। विपटन की शोभा चित दीन्हे, देखते श्याम सखन संग लीन्हें ।। नव किसलयदल सुमन सहाये मनहुं बसन्त श्रृंगार बनाये। मधुर मिष्ट सुन्दर सुखकारी, फलके भार रही नवडारी।''[5]

कृष्ण–भक्त शिरोमणि सूर का पर्यावरणीय दृश्यों में पूर्ण वैविध्य है। कृष्ण और राधा वटवृक्ष के नीचे बैठे मीठी–मीठी बाते कर रहे हैं । शीतल और सुखद पवन चल रही है। इसी समय काली–काली घटाएं घिर आई और जल बरसने लगा । विधुत कौंधने लगी, मयूरगण भी नाचने लगे। राधा विधुत के कौंधने और बादलों के भीषण गर्जन से डरकर कृष्ण से लिपट जाती है । पावस का यह दृश्य राधा–कृष्ण के लिए अत्यन्त कामोद्दीपक है। ग्रीष्म ऋतु में यमुना–तट और भी सुखद हो जाता है । वृक्ष के छायादार कुंज समीप ही खिले हुए पुष्प, यमुना की ओर से बहने वाली शीतल पवन, पक्षियों का कलरव आदि प्रेमी–प्रेमिका के लिए अत्यन्त सुखकारी है। राधा–कृष्ण से इस सुखद पर्यावरणीय परिवेश में दुपहरी व्यतीत करने के लिए अनुनय विनय करती है। इस स्थल पर पर्यावरणीय दृश्य देखिए–

''घाम घरीक निवारिये, कलित ललित अलि पुंज /जमुना–तीर तमाल–तरू मिलत मालती कुंज''[6] श्रीकृष्ण पुष्प–मालाओं से सुशोभित हैं। कस्तूरी, कर्पूर आदि सुगन्धित पदार्थो से कक्ष परिपूर्ण है।[7] निश्चय ही पर्यावरणीय पदार्थ उनके आह्लाद को द्विगुणित कर रहे हैं। सुखद और आनन्दपूर्वक समय व्यतीत करने के लिए प्रेमी–प्रेमिका में विविध क्रीड़ाओं शतरंज, छिपा–छिपी, वन–विहार, फाग, रास आदि का प्रचलन रहा है ।प्रेमी–प्रेमिका की ये क्रीड़ाएं पर्यावरण के अंचल में एक विशेष माधुर्य समाविष्ट करती हैं । कारण पर्यावरण क्रीड़ाओं के अनुरूप माधुर्य प्रकट करती हैं और पर्यावरण का माध्यम भी बनती है । उदाहरणार्थ : जल विहार, वन–विहार, कुंज केशों में कली अथवा फूल लगाना आदि क्रीडाओं का आधार पर्यावरणीय वस्तुएं हैं । कृष्ण–काव्य में वन–विहार का प्राचुर्य है। कृष्ण और राधा का संयोग पक्ष प्रायः यमुनातट पर स्थित वनों में सम्पन्न होता है । कृष्ण गोपियों के साथ वन–विहार का आनन्द ले रहे हैं। साथ में गोपियां नृत्य और गीत भी गाती चलती हैं । यमुना का सुखद तट है। जहां पर कमल खिले हुए हैं, शीतल पवन बह रही है तथा चारों ओर सुगंधि फैली हुई है। वन–विहार कृष्ण और गोपियों के लिए कामोद्दीपक सिद्ध हो रहा है –

''जमुना जल पुलिन सुन्दर जहं फुहरे पवन सुहायो।
चंचल पवन तरंग मनोहर कमलीन पुंज हलायो।
बर महक रहो सौरभ चहुं ओरनि तहां आयहित काजे,
किय तिनके संग नृत्य मनमोहन गीत संगीत समाजे ।''[8]

कृष्ण–काव्य में शारदीय रास को अपेक्षाक त अधिक विस्तार से ग्रहण किया गया है। इस ऋतु में रास को मधुर बनाने का श्रेय 'शरद्–चन्द्रिका' का है । शारदीय रास का पर्यावरणीय उदाहरण देखिए :

''प्रफुलित नव–नव निकुंज त्रिविध–पवन लै झकोर चंद–जोति छिटक हरि, नाचक मुज अंसनिधरि गोर स्याम अंगति मानों, मेघ दामिनी ।''[9] कृष्ण कवि सूर ने राधा और कृष्ण को यमुना में जल–विहार करते खूब दिखलाया है । कृष्ण राधा और गोपियों के साथ यमुना में जल–क्रीड़ा कर रहे हैं । परस्पर एक–दूसरे पर जल छिड़कते हैं। आनन्दमग्न होकर कोलाहल करते हैं । जल–विहार की क्रीड़ा उनके लिए आनन्द की वृष्टि का कारण सिद्ध हो रही है :–

''आस–पास सोभित ब्रज नारी मधि राजत नंदलाल /जल सीकर डारत चहुं दिसि तें निरखि मुदित गोपाल।''[10] शरद् ऋतु का जल–विहार भी अत्यन्त सुखद लगता है। कारण, इस समय मौसम समशीतोषण रहता है। साथ ही सरोवर एवं नदियों का जल निर्मल हो जाता है। कृष्ण और गोपियां ाारदीय जल क्रीड़ा का आनन्द ले रहे हैं। रात्रि का समय है , चारों और चन्द्रिका छिटक रही हैं । कृष्ण गोपियों को अंक में भर लेते हैं और जल सें निकलने पर पुनः जल में खींच लेते हैं। इस प्रकार जल–विहार और उससे सम्बद्ध चष्टाएं कृष्ण और गोपियों की रति–वृद्धि का कारण बन रही हैं ।[11] कृष्ण बचपन से लेकर युवावस्था तक प्राकृतिक वातावरण में ही पले हैं। अतः उनके रूप सौन्दर्य की तुलना भी पर्यावरण से की गई है। देखिए, सूर ने अपनी सारी काव्य सौन्दर्यता इस पर्यावरणीय वैभव में प्रस्तुत की है –

''काम के रूप कलानिधि के मुख/करि से नाक कुरंग से नैनन/कंचन सो तन दारन दंत कपोत से कंठ/सुकोमल बैनन कान्ह लग्यो कहने तिन सों/हसि के कवि स्याम सहायक नैनन ।[12] संयोग पक्ष के जितने भी क्रीड़ा–विधान हो सकते हैं, सूर ने सभी लाकर एकत्र कर दिए हैं । पनघट प्रस्ताव ,कुंज विहार, यमुना–स्नान, जल–केलि समय, पीठमर्दन, गोदोहन के समय राधा के मुख पर कृष्ण का दूध के छींटे फेंकंना, भरे आंगन में संकेतों द्वारा वार्तालाप करना, घर के पीछे तथा वन में मिलना, हिंडोले पर झूलना, रासनृत्य आदि न जाने कितने संयोग वर्णन सूर ने पर्यावरण के माध्यम से प्रस्तुत किए हैं। राधा कृष्ण के मिलन में जो पर्यावरणीय वैभव चारों और प्रकाशित हो रहा था, वह कृष्ण के मथुरा चले जाने पर बिल्कुल मुरझा जाता है। कृष्ण के विरह में राधा को हरे–हरे मधुबन अब बिल्कुल बेरंग दिखाई देते हैं । बारह महीने प्रतीक्षा करने के बाद जब राधा के कृष्ण अन्त में फागुन महीने में भी नहीं पहुंचते तो उसकी आशा–निराशा

में बदल जाती है –

''फागुन फाग बढ़यो अनुराग सुहागन भाग सुहाग सुहाई।/केसर चीर बनाए सरीर गुलाब अबीर गुलाल उड़ाई /सो छवि में न लखी जन द्वादस मास की/सोभित आग जगाई। /आस को त्याग निरास भई टसक्यों न हीयो कसम्यो न कसाई ।''[13] अतः स्पष्ट है सूर ने पर्यावरणीय वर्णन में कृष्ण काव्य के सूक्ष्म से सूक्ष्म पर्यवेक्षण को शामिल किया है। राधा कृष्ण के संयोग वियोग में उन्होंने अपनी कुशाग्र बुद्धि का परिचय दिया है । सूरदास ने कृष्ण के संयोग पक्ष में बसन्त ऋतु के अत्यन्त सुखद दृश्य प्रस्तुत किए हैं । कृष्ण और राधा की विविध क्रीडाएं–वन विहार, कुंज–विहार, फाग, रास आदि पर्यावरण के अंचल में इसी ऋतु में सम्पन्न होती हैं।। बसन्त ऋतु का पर्यावरणीय वातावरण राधा–कृष्ण आदि के लिए परम आनन्दप्रदायक सिद्ध हो रहा है ।[14] ''आयो आयो पिय ऋतु बसन्त दम्पति मन सुख विरह अंत /आयो आयो हरि बसन्त ललना सुख दीन्हों तुरन्त ।''[15]

बसन्त के उपरान्त ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है । इस ऋतु में सूर्य प्रचण्ड़ रूप धारण कर लेता है । गर्म हवाएं और धूल भरी आंधियॉं चलने लगती हैं । राधा और कृष्ण दुपहरी के समय खसखाने में बैठे हैं, सुगन्धित फुव्वारे चल रहे हैं । फूलों के बने हुए पंखे से राधा कृष्ण पर हवा कर रही है और उनके लिए मालती और गुलाब की माला बनाती है । इस तरह ग्रीष्म ऋतु भी उनके लिए सुखद और कामोद्दीपक हो गयी है ।

''राधा जल बिहरति सखियन संग /ग्रीष्म प्रजेत नीर में ठाढ़ी, थिरकति जल अपने अपने रंग''/'गई ब्रज–नारि जमुना–तीर /स्नान कौ वे भाई आतुर, सुभग जल गम्भीर ।''[16] पावस ऋतु में मूसलाधार वर्षा होने लगती है । आकाश मण्डल मेघों से आच्छादित हो जाता है । शीतल पवन बहने लगती है। चारों ओर हरियाली छा जाती है। लोग पुनः उल्लास और उमंग का अनुभव करने लगते हैं, सूरदास ने संयोग में पावस–ऋतु के वर्णन की परम्परा को ग्रहण किया है। पावस में परमात्मा रूपी प्रिय का सान्निध्य प्राप्त है । चारों और से मेघ घिर आए हैं । मयूर की सुखद ध्वनियां गूंज रही हैं। निश्चय ही पावस ने परमात्मा–रूपी प्रिय के सहवास को सुखद बना दिया है।

''हरि संग लागत बुंद सोहावन। /चहुँ दिसि तें घन घोरि घटा आई/सुन्न भवन डरपावन /बोलत मोर सिखत के ऊपर /नाना भांति सुहावन ।''[17]/कृष्ण भक्त कवि सूर ने राधा–कृष्ण के सहवास की बेला में हिंडोला, कुंज–विहार और रति क्रीडाओं के सन्दर्भ में पावस–ऋतु का वर्णन उपस्थित किया है। पर्यावरणीय दृश्य देखिए पावस ऋतु का– नन्हीं–नन्हीं बूंदो से वर्षा होने लगी, कोयल का पचंम स्वर सुनाई पड़ रहा है। राधा और कृष्ण इस सुखद ऋतु में हिंडोला झूल रहे हैं । हिंडोले पर कृष्ण–राधा को अपनी भुजाओं में भर लेते हैं। यहां पावस ऋतु का पर्यावरणीय लावण्य बड़ा ही सुखद तथा मनमोहक प्रतीत हो रहा है। साल के अन्तर्गत बारह महीने (आषाढ़, श्रवण आदि) होते हैं।ऋतु परिवर्तन के साथ–साथ हर महीने की जलवायु पर्यावरणीय वातावरण में भी परिवर्तन आता रहता है। प्रेमी–युग्ल किसी महीने में अधिक आनन्द का अनुभव करता है तो किसी में कम । वस्तुतः आनन्द में कमी तथा अधिकता का कारण महीनों की बदलती हुई जलवायु है। ज्येष्ठ की तपन से मानव मन व्याकुल हो उठता है। किन्तु वहीं श्रावण मास की फुहार को देखकर उल्लास और आनन्द से भर जाता है। राधा–कृष्ण के प्रणय का वर्णन करते हुए सूर कहते हैं कि राधा के खंजन नयन और कृष्ण के कमल नयन लड़ गये। उन्होंने मंजरी और मोती की मालाएं अपने–अपने शरीर पर धारण कर रखी हैं। कालिंदी तट पर प्रणय के क्षणों में पर्यावरण का दृश्य देखिएः–

आलिंगन दे अधर पान करि खंपन कंज लई,/हठ करि मान कियो जब भामिनी तब गहि पाई परे /पुहुप मंजरी मुक्तनि माला अंग अनुरागि घरे।/ले गये पुलिन कालिंदी रस बस अनंग जरै ।''[18]/महाकवि सूर ने कृष्ण–काव्य में ऋतुओं में मनाए जाने वाले पर्वो और वर्ष भर के ऋतुत्सवों का वर्णन किया है। सभी त्यौहारों के अन्तर्गत कृष्ण–काव्य में सूर ने पर्यावरण की झलक दिखाई है, जैसे–जैसे कोई त्यौहार आता है खुशियां आती हैं, लोग झूमते हैं, नाचते हैं उसी तरह पर्यावरण भी खुशी मनाता है तथा चारों तरफ अपनी महक से सारे वातावरण को आनन्दित कर देता है । सूर ने बसन्त पंचमी और बसन्त ऋतु का वर्णन अनेक रूपों में किया है । बसन्तोत्सव में सूर कृष्ण के बाहरी स्वरूप की नित्यता की महिमा का गायन करते हैं। बसंतोत्सव के उल्लासमय क्षणों में भी गोपी और कृष्ण का प्रेम–नित्य है। कुंजों का सुख नित्य है। कोमल स्वरों को सुनकर बसन्त आगमन की सूचना से ब्रज नारियां हर्षित हैं–

''कुहू कुहू कोकिला सुनाइ–सुनी–सुनी नारी परम हरशाई।/बार–बार सो हरिहं सुनावति, ऋतु बसंत आयौं समुझावति।''[19]/ग्रीष्म ऋतु का फूल–मण्डली उत्सव चैत्र के प्रथम पखवाड़े में वृन्दावन, मथुरा के मन्दिरों में फूल–डोल के उत्सव के रूप में मनाया जाता है। सूर ने पर्यावरणीय वैभव फूल–डोल अथवा फूल–मण्डली के द्वारा इसकी चर्चा की है। सूर ने फूलों के महल तथा फूलों की शैयया पर नव किशोर दम्पति को प्रेम क्रीड़ा करते दिखाया गया है –

''फूलिन के महल, फूलिन सेज, फूले कुंज बिहारी, फूले राधिका प्यारी।/फूले वे दम्पति नवल मग्न फूले कर केलि न्यारी ये न्यारी ।''[20]/राधा की सम्पूर्ण साज सज्जा फूलों द्वारा ही की गई है । उनकी वेणी में फूल गुथें हैं । अंगिया फूलों से बनी है, साड़ी में मानो फुलबारी बन रही है । उनके सभी आभूषण दुलारी, हुमेल, हार, चपेमा, कुंडल फूलों द्वारा बनाये गये हैं । सूरदास ने न केवल पर्यावरण का सुन्दर वर्णन ही किया है अपितु पर्यावरण का भयानक रूप भी हमारे सामने चित्रित किया है, जैसे भूमि कम्प होना, आकाश में तारों का टूटना, बैल, घोड़े हाथी का रोना, दिन में सियार और रात को कौओं का बोलना, वर्षा कम होना, भावी अमंगल सूचक आदि उदाहरण भी सूर ने हमारे सम्मुख प्रस्तुत किए हैं–

''असुभ सूचने फरकें गात।/भूमिकंप नभ तें उडु

उडुगिरे,/अवर असगुन निरीख धरहरे ।''/नीला आकाश, श्याम घटा, श्वेताम्बरी ज्योत्सना, सरिता का कल–कल नाद, आकाश को चूमते हुए शैल–शिखर, क्रीड़ा करते हुए पशु–पक्षी एवं विभिन्न वस्तुएं ऐसे सौन्दर्यमय पर्यावरणीय उपकरण हैं जिन से सौन्दर्य उपासक मानव सहज ही आकृष्ट हो जाता है। मानव अपने सुख–दुख के आधार पर ही पर्यावरण का अवलोकन करता है । सूरसागर में पर्यावरण के शुद्ध रूप में अनेकों चित्र अंकित किए हैं । सूर्योदय का यह वर्णन चित्राक कि हैं :

''जागिए ब्रजराज कुंवर, कमल–कुसुम फुले।/कुमुद–वृन्द–संकुचित भए, मृग लता झूले ।/तमचुर खग–शेर सुनहु, बोलत वनराज ।''[21]/महाकवि सून ने मेघ, चपल आदि का वर्णन प्रायः सुन्दर ढंग से किया है । गोवर्धन लीला प्रसंग में ब्रज में उमड़–घुमड़ कर बरसने वाले बादलों का चित्रण सूर ने बड़े स्वाभाविक ढंग से किया है । /मेघ–दल प्रबल ब्रज लोग देखें । चकित जहं–तहं गए । /निरखि बदर नए, ग्वाल गोपाल डरि गगन पंखे/ऐसे बादर सजल करत अति महाबल चलत घहरात अंधकाल करि/चकित भए नन्द, सब महर चकित भए, चकित नर नारि हरि करत ख्याला।/घटा घनघोर घहरात घरात, दरात, घरात, ब्रजलोग डरपै।/तड़ित–आघात तररात उत्पाद सुनि नारि–नर सकुचि तन प्रान थरपे।''[22]/सुर ने प्रातः कालीन बेला का बड़ा ही सुन्दर पर्यावरणीय दृश्य प्रस्तुत किया है । कमलों का पुनः खिल जाना, कुमुदी का बन्द हो जाना, वन में तमचुर का शोर, गायों का गौशालाओं में रंभा उठना, चन्द्रमा का ज्योतिहीन हो जाना, सूर्य का चमक उठना, आदि बहुत ही आकर्षक ढंग से प्रस्तुत किए हैं ।

सूर की दृष्टि पर्यावरण के दिन–रात, फल, वृन्दावन की ढ़लती सांझ, कमलवदन का कुम्हलाना, प्रातः काल आदि पर गहन रूप से पड़ रही है । सूर का समस्त काव्य पर्यावरण की ऊर्जा–ग्रहण कर मानव मन की चित्रवृति को प्रतिबिम्बित करता है। /'साहित्य–लहरी' में प्रतीक्षारत विप्रबलब्धा नायिका का चित्रण है जो पूरी रात्रि प्रिय की प्रतीक्षा करती है । /''बीती जामिनी जुग चार /जातबेद सुमोहि भारी और भूषण जार ।''[23]/उद्धव–संदेश में गोपियां उद्धव से विरह–व्यथा का वर्णन करते हुए पर्यावरण–सम्बन्धी संकेतों का प्रयोग करती हैं । भंवर, कुरंग, कमल नैन, काली घटा, बादल, चातक आदि पर्यावरण से सम्बन्धित हैं जिनका सार्थक प्रयोग सूर ने किया हैः–

''कारी घटा देरिव बादर की, सोभा देति अपार ।/सूरदास सरिता सर पोषित, चातक करत पुकार ।''[24]/गोपियां उद्धव को उलाहना देकर उसे काला कहने लगती हैं जैसे उसे नीले मटके से निकाल काली जमुना में धो दिया होः–

''कमलनैंन की कौन चलावै, सबहिनि मैं मनियारे। /मानौ नील माट तैं काढ़े, जमुना आई परवारे । /तातै स्याम भई कालिंदी, सूर स्याम गुन न्यारे ।''[25]

'सूरसारावली' में पर्यावरण–वर्णन का दार्शनिक आधार प्रस्तुत करते हुए सूरदास वृन्दावन धाम की क्रीड़ा के विषय में बताते हैं कि ब्रजमोहन का चरित सामवेद, ऋग्वेद और यजुर्वेद में कहा गया है। कथा के इस इतिहास के बाद पुनः राधा–कृष्ण की विहार लीला का सूत्र पकड़ लिया जाता है । सकल ब्रह्माण्ड होली के समान जलने लगता है ।

''सकल तत्व ब्रह्मांड देव है और माया काल है।/प्रकृति–पुरूष श्रीपति नारायण के अंश सब गोपाल है ।''[26] गोचारण में पर्यावरण के प्रांगण में कृष्ण अपने सखाओं के साथ बाल–क्रीड़ा करते हैं। प्रकृति और सुबल, सुदामा और श्रीदामा आदि अब ग्वालों को साथ लिए गोपाल बछड़ो को चराने चल दिए। वे बछड़ो को वन के बीच में छोड़कर स्वयं विचित्र खेल खेलने लगे और गायें हरी–हरी घास का आनन्द लेने लगी –

''आजु मैं गाई चरावन जैहौ । /वृन्दावन के भांति भांति फल आने कर मैं खेहौं।/ऐसी बात कहौ जनि बारे देखों तपनी भांति/तनक–तनक पग चलिहों कैसे आवत हवै है राति।/प्रात जाता गैया लै चारन घर आवत है सांझ । /तुम्हारौ कमल बदल कुम्हिलैहैं रेंगत धामाहिं सांझ/तेरी सौं मोहिं घाना लागत भूख नहीं कुछ नेक ।/सूरदास प्रभु कहयौं न मानत परयौं आपनी टेक ।''[27]/सूर की दृष्टि पर्यावरण के दिन, रात, फल, व न्दावन की ढलती सांझ, प्रातः काल आदि पर गहन रूप से पड़ी है ।/अतः कहा जा सकता है कि सूरदास की दृष्टि एक पैनी दृष्टि है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. लता जोशी, पर्यावरण की राजनीति प॰ 21 2. सूरसागर, दशमस्कन्ध पद 20/638 प ॰264 3. व्यासवाणी पद सं॰ 606 प ॰218 4. सूरसागर, 275 प ॰285 5. बिहारी रत्नाकर, बिहारी, प ॰57 6. ब्रजवासी दास, ब्रजविलास, प ॰200 7. बेली किसन रूपमणी री, प थ्वी राज प ॰40 8. सोमनाथ, रास पंचाध्यायी, प ॰56 9. कुम्भनदास कुम्भन प ॰26 10. भावविलास, देव, प ॰56 11. भक्त कवि ब्यास जी, प ॰375 12. सूर सारावली, पद संख्या 885, 886, प ॰801 13. सूरसागर, प्रथम खण्ड प ॰925 14. कबीर की शब्दावली, भाग 4, कबीर पृ॰ 8 15. सूरसागर सेतु, प ॰191 16. सूरसागर सेतु, प ॰192 17. दीनदयाल, दीनदयाल ग्रन्थावली, प ॰23 18. सूर सागर सेतु, प ॰200 19. सूरसागर, दूसरा खण्ड, दशम स्कन्ध, न॰ प्रा॰ स॰ काशी 20. सूरसागर पद 3074, प ॰1074 21. सूरसागर (भाग–1) सूर, प ॰229–230 22. सूर सागर प ॰1473 23. सम्पादन मदनमोहन गौतम, साहित्य लहरी पद 40, प॰ 69 24. सम्पादक धीरेन्द्र वर्मा, सूरसागर सटीक, पद 101, प ॰301 25. सम्पादक राजेन्द्र कुमार, लोक भारती प्रकाशन, दिल्ली पद 1136, प ॰836 26. सूरसावली छंद 100, प ॰381 27. डॉ॰ प्रभुदयाल मित्तल, सूरसागर सेतु, प ॰190